22 23 24 25 26 27
29 30

P.G, II Sem

# द्विवेदीयुग

**इतिवृत्तात्मकता** — द्विवेदीयुगीन कविता में श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति प्रायः नहीं की गई। इस युग की आदर्शवादिता, आर्य समाज का प्रभाव आदि के कारण कवियों ने श्रृंगार रस परक कविताएँ नहीं रची। द्विवेदीयुगीन काव्य की इतिवृत्तात्मकता भारतेन्दुकालीन इतिवृत्तात्मकता का ही विकसित रूप है। इस प्रवृत्ति ने काव्य को शुष्क, नीरस एवं गद्य जैसा बना दिया था। द्विवेदीयुग की कविता में उपयोगितावादी दृष्टिकोण अपनाया गया है। उसमें कथ्य की अभिव्यक्ति की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। इस युग की कविताओं में कल्पना तत्व के अभाव के

रविवार 10

कारण सरसता नहीं आ पायी है। ठाकुर गोपालशरण सिंह मानवता और विश्व प्रेम को महत्व देते हुए कहते हैं —

'जग की सेवा करना ही बस है,
सब सारों का सार।
विश्व प्रेम के बन्धन ही में,
मुझको मिला मुक्ति का द्वार॥

**प्रकृति-चित्रण** — रीतिकाल में प्रकृति का चित्रण भावना को उद्दीप्त करने के उद्देश्य से किया

जाता था। द्विवेदीयुग के काव्य में प्रकृति का स्वतंत्र रूप में चित्रण पहली बार हुआ है। राम नरेश त्रिपाठी ने 'पथिक' और 'स्वप्न' काव्य-ग्रन्थों में प्रकृति का चित्रण किया है। स्वप्न में वेगवती पहाड़ी सरिता का यह चित्र देखा जा सकता है:—

'पर्वत शिखरों का हिम गलकर, जल बनकर नालों में आकर।
छोटे-बड़े चीकने अगणित शिला समूहों से टकराकर॥
गिरता-उठता फेन बहाता, अति कोलाहल कर-कर।
वीरवाहिनी की गीत से कहता



रहता निसवासर॥

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्रकृति के प्रेमी थे। उन्हें प्रकृति का चित्रात्मक वर्णन बड़ा प्रिय रहा है। उन्होंने प्रकृति और मनुष्य के बीच के रागात्मक संबंध को महत्व दिया है। प्रकृति-चित्रण की दृष्टि से गुप्त जी का 'पंचवटी' खण्ड-काव्य का विशेष महत्व है।

नवीन विषयों का समावेश —
द्विवेदीयुगीन काव्य में

पहले से चले आ रहे काव्य विषयों के क्षेत्र में पर्याप्त वृद्धि की गई है। साधारण विषयों पर भी इस युग में कविताएँ रची गईं थी। रीतिकालीन काव्य दरबारी काव्य था जिसमें प्रायः आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा की जाती थी और उनके मनोरंजन के लिए श्रृंगारपरक रचनाएँ प्रस्तुत की जाती थी परन्तु द्विवेदीयुग में समाज-सुधार, विधवाओं के प्रति सहानुभूति संबंधित रचनाएँ, मानव सेवा, विश्वसेवा विषयों पर रचनाएं की गयीं थी। गुप्त जी जैसे कवियों ने युग-युग से उपेक्षित नारियों को काव्य में प्रतिष्ठित कर उन्हें गौरव प्रदान किया है। 'कामता प्रसाद गुरुव' ने मैना के माध्यम से अंग्रेजों की गुलामी करने में



अपना गौरव महसूस करनेवाले भारतीयों पर व्यंग्य करते हुए लिखा है! —

"पराधीनता में रहकर यह, अपना सबकुछ भूल गई
भाषा, भोजन, भेद, भव
भावी-सब बातें हुई नहीं।
अपनी जन्मभूमि का भी,
अब इनको कोई ध्यान नहीं।
वन के जो प्यारे साथी हैं,
उनकी भी पहचान नहीं।

द्विवेदीयुग के कवियों का उद्देश्य जनता में नई चेतना उत्पन्न करना था और वे कविता के माध्यम से यह कार्य कर रहे थे। यही कारण है कि उनके काव्य में स्वान्तः सुखाय कविता करनेवाले रीतिकाल की रीतिमुक्त धारा की कवियों की सी अनुभूति की गहराई नहीं आ पाई।

काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली की प्रतिष्ठा

द्विवेदीयुग की कविता की एक बड़ी विशेषता है खड़ी बोली भाषा का प्रयोग। रीतिकाल में ब्रजभाषा में ही



कविता रची जाती थी और भारतेन्दु-युग में खड़ी बोली का प्रयोग का मामूली प्रयास किया गया। परन्तु इस युग में खड़ी बोली में ही कविता रची जाने लगी थी। द्विवेदी जी 'सरस्वती' में प्रकाशित कविताओं की भाषा की दृष्टि से परिष्कार करते थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी, हरिऔध और गुप्त जी ने खड़ी बोली भाषा के परिष्कार के लिए बड़ा परिश्रम किया। द्विवेदी जी ने उर्दू तथा अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों को भी हिन्दी में लिखने के

(5)



लिए प्रोत्साहित किया।

इस प्रकार काव्य को ब्रजभाषा की संकरी गलियों से खड़ी बोली के राजमार्ग पर लाने का श्रेय द्विवेदीयुग को है। इस युग के कवियों ने एक ओर तो भाषा को काव्य रचनायोग्य बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया दूसरी ओर संस्कृति-रक्षा, समाज-सुधार, जातीय उत्थान व राष्ट्रीय हित का कार्य किया। 'डॉ केसरी नारायण शुक्ल' ने द्विवेदीयुग के कवियों के बारे में बताया है



कि "सच्चे कवि के समान ये युग से प्रभावित भी हुए, और उसपर अपनी छाप भी लगा दी और इस प्रकार काव्य को उन्नतिशील बनाया। इस पर द्विवेदीयुग का काव्य जहाँ राम और सांस्कृतिक सम्पर्क, संघर्ष और संस्कार की कथा कह रहा है वहाँ इन कवियों की सहानुभूति, सच्चाई और स्वतंत्र तथा उदार व्यक्तित्व का संकेत दे रहा है। इसी में इन कवियों की सफलता और इसी में इन कवियों की महत्ता है।"